बच्चों को समझ मिला है जो कुछ सुनते है उस पर विचार चलाने की। बच्चे समझते है कि तुम हो [illegible] बाबा के साथ है। लौकिक वाप के साथ होने लिय यह गीत नही गा सकते है। ज्ञान-सागर बाप के साथ हो यह उनकी ही महिमा है। यह है पढाई। परन्तु इसको बरसात नाम क्यो दिया है? क्योंकि आग को बुझाने के लिये पानी जरूर चाहिय होता है। तो यह कामाग्नी है नां। उसको बुझाने लिय ही यह ज्ञान बरसात चाहिये।अब तुम बच्चों पर वर्षा हुई है। जो बाप का बने है उन पर ही तो वर्षा होगी नां। बाप का ही नही बनेंगे तो ज्ञान बरसात कहां से आवेगी। पहले तो यह बाप जो कि ज्ञान का सागर है उनका परिचय देना है। कृष्ण को पिया नही कहा जाता है। ज्ञान सागर को ही पिया कहा जाता है।जो भी धर्म वाले है सभी को तुम जानते हो। ऐसे कोई नही कहेंगे कि हमारा धर्म है ही नही। फिर तो हिन्दु भी क्यो कहलाना चाहिये। हिन्दुस्तान मे रहने करण ही धर्म भी हिन्दु ही कह दिया है। धर्म को माने तो सभी चीजो को माने। ल-न आद के मन्दिर बनाते है तो गवर्मिन्ट भी तो मदद करती है नां।रामलीला आद करते है तो कितने पैसे आद खर्च करते है। धर्म को मानने वाले भी है तो नही मानने वाले भी है। यह बाप जो कि आदी सनातन देवी देवता धर्म की ~~स्थाप~~ स्थापना करते है वो ही समझाते है। तुम अपने धर्म को भी जानते हो। धर्म स्थापक को भी जानते हो। मनुष्यों को तो यह पता नही है कि आदी सनातन देवी धर्म की स्थापना कोई शिव बाबा ह करते है।यह और कोई भी नही जानते है। तुम्हारे इस गोले मे लिखा हुआ है कि आदी सनातन देवी देवता धर्म स्थापन करने वाला परमपिता परमात्मा शिव बाप है। गीता पर भी लिखते हो कि त्रिमूर्ती शिव परमात्मा की गीता। बाप की गीता गाई हुई है नां कि बच्चे वो।अब बाप तो है निराकार वो ही है ऊंच ते ऊंच। उनको तो नम्बरवन मे भी नही कहेंगे।नम्बरवन से भी ऊंचा है। उनके ऊपर नही नम्बर लगा सकते है। अगर पहले नम्बर मे आवे तो फिर तो उनको 84के चक्र मे भी आना पडे। भगवान है ही एक जो इस 84के चक्र का नालेज बैठ कर सुनाते है। नम्बरवन विश्व का मालिक तो ~~बाप~~ इन ल-न को ही कहा जाता है। शिव बाबा को नही कहेंगे। वो तो एक से भी दूर है। वो गिनती मे नही आते है। गिनती मे 84जन्म लेने वाला आता है। भल शिव बाब इनमे आते है तो भी जन्म नही गिने जावेंगे। भल शिव जयन्ति मनाते हैपरन्तु यह तो गिनती मे नही आ सकते है। 108दाने गिने जाते है नां। 109 हो तो फिर तो उनमे ही एक यह भी आ जावे। परन्तु नही। यह प्रवृती मार्ग और निवृती मार्ग न्यारा है। बाप कहते है कि मै तो एक ही हूं। गिनती मे तो वो ही आते है जो कि चक्र मे आते है। मै तो आता ही हूं सिर्फ पतितो को पावन बनाने। पावन बनाने वाला तो जरूर चाहिय ही नां। तुम बच्चे जानते हो कि यह दुनियां पावन थी। आदी सनातन ल-न का राज्य था।दुनियां भर मे कोई भी ऐसा मनुष्य नही होगा जिनकी बुद्धि मे कि यह बाते हो। तुम्ही जनते हो। 2500वर्ष तो इन ल-न वां देवी देवताओं का ही राज्य था। उनकी भी है 2500वर्ष। बाब के पास आते है कहते है कि बाब 5000वर्ष पहले भी हम आपसे मिले थे। बाबा आप पर हम ही 5000वर्ष पहेल भी कुरबान हुये थे। अब फिर हम आये है। कुरबान जावे यह चाहते है कि जन्मजन्मान्तरो की थी वो अधपुरी हो रही है। बाबा आप फिर आवेंगे तो आप से हम जरूर वर्सा लेंगे। बच्चे ही तो इस वर्से केे हकदार बनते है न्। हर एक जो भी जिस भी धर्म के है उनके ही वारस बनते है।तुम बेहद के बाप से वर्सा लेते हो। तीन बाप इकठे होते है तभी तुम ने वर्सा मिलता है। और कोई न ऐसा तो होता नही है। क्रिश्चयन करके क्राईस्ट का वर्सा लेंगे।वो लोग तो अपने धर्म पर बहुत पक्के होते है। कोई-2 म के देखने के लिय आते है सन्यासी भले वृश्चनस को ले आते है परन्तु वो कोई अपनाए धर्म नही छोडते है। सिर्फ आकर देखते है कि किसने प्राचीन राजयोग सिखाया था? उस समय ही तो सारे विश्व मे शान्तिः स्थापन हुई थी।यह भी किसीको पता नही है। सारे विश्व मे शान्तिः तो तभी ही हो जबकि सभी परमधाम मे हो। प्रलय माना ही शान्तिः। परन्तु प्रलय तो होती ही नही है। शास्त्रो मे दिखाया है

दिखाया है कि प्रलय हुई पाण्डव और एक कुत्ता बचा। यह जैसे कि एक कहानी बना दी है। बाबा निकाल देते है। समझो यह बच्चा है समझता है कि मै आगे आदी सनातन देवी देवता धर्म का था। फिर ड्रामा अनुसार मै अपने धर्म को भूल कर हिन्दु कहलाने लगा। अब फिर बाप का बना। पवित्र भी बनते है। समझो यह शिव बाबा को याद करना छोड कर क्राईस्ट को याद करने लग जाता है। फिर इनकी वो पहले वाली वाली समझ तो चली ही गई नां। देवी देवता धर्म तो सभी से अच्छा है। यह क्रियश्चन धर्म तो थर्ड ग्रेड वाला वाला है। हम अगर क्राईस्ट को मानेंगे फिर तो स्वर्ग मे आ ही नही सकेंगे। गोया स्वर्ग को लात मार देते है। अच्छा फिर कोई मुसलमान बन जाते है। ऐसे होता तो बहुत ही है नां। बाप ने भी 2गुरु किये है नां। कोई राधस्वामी पंथ का बन जाते है। अभी हम जानते है कि हम तो स्वर्ग मे जाने वाले है। राधा स्वामी के तो बड़े ही पिछाडी मे आने वाले है। स्वर्ग मे तो जा ह नही सकेंगे। फिर स्वंग की स्थापना करने वाले को याद भी कैसे करेंगे। ऐसे तो नही है नां कि सभी को याद करने लग जावेंगे। वो तो फिर भक्ति भी व्यभचारी हो जाती है। सभी भक्त व्यभचारी नही होते है। राधास्वामीयों के होंगे तो उनको ही मानेंगे। सन्यासी अपने सन्यास धर्म को ही मानेंगे। एक धर्म को पकडना चाहिये। नही तो आरवरीन समझ मे ही नही आता है कि किस झाड की चिडियां है। कोई-2 तो ऐसे है कि क्राईस्ट को वो साईबाब को ही याद करने लग जाते

****

है। मुसलमान वो भी मुहम्मद जे कि पीछे आया है। इस्लामी धर्म तो अलग है। मुहम्मद को तो अभी ही थोडा ही समय हुआ है। तो अब उनको भी याद करते है तो दुसेर को भी याद करते है। एक को याद किया तो फिर तो दुसरा धर्म वाला भूल जाना चाहिये नां। एक को ही पकडना चाहिये। तीनो चारो धर्मों मे तो और्दों ही नही। जो आता है उन्ही को गुरु बना लेते है। फिर वर्मा तो पा नही सकेंगे। वो तो भक्ति की लाईन मे आ जाते है। ज्ञान की लाईन मे नही। यहां पर भी बीज बोया तो वहां पर भी बीज बो लेते है। क्रियश्चनस के पादरी आदि आते है तो भी जो फण्ड आदि तो इकठा करते ही है नां। तो उनको भी देते है। क्यों उनके पास पैसे तो ढेर है। उसैस ही खर्चा करते है जास्ती भीख नही मांगते है। अब तुम लोगो को तो प्रवाह ही नही है। तुमने तो एक ही बाप को गुरु बनाया है। वो तीनो ही है। तुम्हारी तो बाते ही बिलकुल ही न्यारी है। सब से ऊंच बहुत सुख देने वाला धर्म को भूल दूसरे तीसरे मे जाना गोया बाप के वर्सा को छोड़ दिया। परन्तु फिर भी थोड़ा बहुत ज्ञान सुना है तो उनका विनाश नही होता है। आवेंगे जरूर। याद की यात्रा मे नही रहते है इसलिए पाप विनाश नहीं होते। पाप और ही बनते जाते है। जन्म-जन्मान्तर के सब पाप रह जावेंगे। पाप करते भी रहेंगे तो जमा हो जावेगा। जमा और नाई होती है ना। दो चौपड़ी खेल जाते हैं। थोड़ा 2 कर के कला उतरती तो है ना। सीढ़ी तो जरूर नीचे उतरेंगे। यह तो समझ की बात है। कोई न भी समझे तो आपस में भी पूछ सकते हैं। अगर बाप से पूछने में लज्जा होती है तो आपस में भी पूछ सकते हैं। न समझ में आता है तो बाप के पास आना चाहिए। फिर उपर से भी पूछा जाता हैं। वास्तव में तो कुछ भी पूछने की दरकार नहीं हैं। हम देवी देवता बनते हैं तो हमारे में गुण भी देवी होना चाहिए। आपे ही दिल अन्दर आवेगा हमारा भोजन तो बिलकुल शुदध होना चाहिए। पूछने का थोड़े ही रहता है कि यह चीज खाना छोड़ूं या नहीं। समझते हैं हम देवता बनने वाले हैं तो वह देवी गुण धारण करनी हैं। देवताओं को कोई ऐसी अशुदध चीज का भोग थोड़े ही लगाया जाता हैं। यह तो आपे ही छोड़ना पड़े। अगर लाचारी मेस आद में खाना पड़ता हैं इसके लिए भी बाबा ने समझा दिया हैं। बाबा हर बात मुरली में समझाते हैं। मेस आद में खाना पड़े, तुम याद में रह खाओ तो असर न होगा। सिवा याद की यात्रा और कोई उपाय नहीं। बाप समझाते हैं मुख्य बात ही हैं कि पतित से पावन होना हैं। रावण राज्य में सभी मनुष्य पतित हैं, ना। बाप कहते हैं यह काम महशत्रु हैं। आदि, मध्य अन्त दुःख देने वाला हैं। बाप पूछते पतित तो नहीं हुये हो। पापों का सफाई का रास्ता भी बताते हैं। वह तो एक ही रास्ता हैं। दूसरा कोई

रास्ता होता नहीं। पावन बनने का दूसरा कोई रास्ता जंचता है? अगर कोई समझते हैं हां पावन बनने का और कोई रास्ता है तो बाबा को लिख भेजे। परन्तु हो नहीं सकता। गीता से ही बाप ने पतित से पावन बनाया हैं। गीता का युग भी यह हैं। पुरुषोत्तम संगम युग पर ही तुम यह राजयोग सिख पुरुषोत्तम बनते हो। दूसरा कोई शास्त्र है नहीं। संगम युग भी जरूर चाहिए। सर्व का सदगति दाता पतित पावन भी एक को कहा जाता हैं। बच्चे समझते हैं वह बाप हमको पढ़ाते हैं। फिर आधा कल्प रावण राज्य होता ही नहीं जो पाप बने। भल सीढ़ी नीचे उतरते ही हैं, परन्तु पाप नहीं होते। पुरानी दुनिया होती है तो उसमें हम रहने वाले भी पुराने होते जाते हैं। कलाएं तो कम होती हैं ना। पहले 16 कला फिर 14 कला। सतयुग से त्रेता में जरूर थोड़ा सुख कम होगा। तुम्हारा धर्म पहले सुख भोगता हैं। पीछे पिछाड़ी में दुख होता हैं। दूसरे धर्म वाले को शुरू में कोई इतना सुख नहीं होता। जब धर्म की बहुत वृद्धि हो, राजाई स्थापन हो तब सुख हो। होंगे ही थोड़े तो सुख क्या भोगेंगे। अभी देखते हो वह अपने को कितना सुखी समझते हैं। कहते हैं स्वर्ग तो अभी हैं। आगे यह बिजली आद थोड़े ही थी। भल इस समय उन्हों का राज्य है परंतु कहेंगे तो कलियुग ना। यह हुनर इन्हों का अब निकला हैं। पहले2 तो विलायत में इनवेन्शन होती हैं। सांयस घमंडी है ना। तो वह जैसे अपने स्वर्ग से भेंट करते हैं। माया का भी पाम्प है ना। कितना भभका हैं। फिर इन भभके से विनाश भी करेंगे। यह हैं पिछाड़ी। अन्त का मेला हैं। कहते हैं ना "मेला मता, माल खता"। जब सांयस बहुत जोर हो जावेगा तो फिर यह सब खतम होजावेंगे। रावण का माल सारा खतम हो जावेगा। एण्ड हो जावेगी। फिर नई दुनिया होगी। इन आंखों से जो कुछ माल-मिलकीयत देखते हो वह रहने का नहीं हैं। सभी आत्माएं नीचे आवेंगे बहुत बड़ा मेला हो जावेगा। फिर यह पुरानी दुनिया को जो कुछ देखते हो यह खप जावेगी अर्थात विनाश हो जावेगी। फिर तुमको नया मिल जावेगा। तुम्हारी आत्मा भी नई शरीर भी नया मिल जावेगा। वह हैं ही सुख की दुनिया। वहां और कोई धर्म न होगा। पुरानी दुनिया ही नहीं होगी। तुम अभी नई दुनिया के लिए पढ़ते हो। स्कूल में तो मर्तबे होते हैं ना। संगम में मर्तबे की बात नहीं होती। तुम तो इस पढ़ाई से राज्य लेते हो। पढ़ाई में नम्बरवार होते हैं। पढ़ाई तो बिलकुल सहज हैं। तुम जानते हो पुरानी दुनिया विनाश हो जावेगा। नई दुनिया की स्थापना हो जावेंगी। तो बचेंगे वह देखेंगे और वर्णन भी कर सकेंगे। बाकि हम बचे हैं। कुछ रावण सम्प्रदाय के और कुछ राम सम्प्रदाय के होंगे। रावण सम्प्रदाय के तो फिर आवेंगे नहीं। वह तो फिर बिलकुल पिछाड़ी में आवेंगे। तुम बिलकुल नये और वह बिलकुल पुराने। नये वहां रहेंगे बाकि सब चले जावेंगे। सतयुग त्रेता में आवेंगे नहीं। कमाई ही नहीं कि की। यह सब बातें आगे चल कर समझते रहेंगे। अभी टाईम पड़ा हैं। बाबा और भी प्वाईन्टस बताते रहेंगे। अभी तुम समझते हो स्वर्ग फिर कैसे होगा। हीरे जवाहर आद कहां से आवेंगे। सतयुग में थे तो जरूर ना। जैसे थे वैसे ही फिर होंगे। अभी यह ख्याल नही करते इतने जवाहर हीरे आद कहां से आवेंगे। नई दुनिया में सब कुछ होगा जरूर। आगे चल कर यह भी सब पिछाड़ी की बातें तुम समझते जावेंगे। दुनिया कैसे बदलती हैं। सोना हीरे, जवाहर आद सब कहां से आते हैं। आगे चल तुम समझ लेंगे। स्टुडेन्ट की बुद्धि में सारा दिन पढ़ाई ही रहती हैं। और फिर घर का काम आद भी करते हैं। तुम भी सारा दिन पढ़ाई आद ही तो नहीं करते हो, और भी काम करते हो। अनेक प्रकार के सर्विस होती हैं। यह भी तुम बच्चे जानते हो स्वर्ग में बहुत स्वच्छता होगी। तुम विष्णु पुरी में जाने लिए कितने पवित्र बनते हो। पुरुषार्थ कर रहे हो। युक्ति भी बहुत सहज हैं। तुम किसको भी समझा सकते हो। यह (ल०ना०) 84 जन्म जरूर लेंगे। जो सूर्यवंशी में पहले आये होंगे वह ही 84 जन्म लेंगे। पिछाड़ी वाले भी आते रहेंगे। सब इकट्ठे तो नहीं आवेंगे। धीरे-धीरे सतयुग त्रेता में आते रहेंगे। नम्बरवार जैसे रहेंगे वैसे आते रहेंगे। तुम ने देखा है स्टार्स कैसे गिरते हैं। देखने में आता है ना। आत्मा को तो कोई देख नही सकते। वह स्टार्स आद को जानना यह तो नजुमत की बातें हो गई। इन बातों से हमरा कोई कनेक्शन नहीं हैं। हम इस पुरानी दुनिया के सभी बातें भूल जाते हैं। फिर

मीपुरुषार्थ करते हैंपावन बनने का।और कोई बातों से तुम्हारा कनेक्शान नहीं हैं।पावन दुनिया में जाने का एक
ही रस्ता हैं।हम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन जावेंगे।हमको एक ही बसीकरण मंत्र मिला हुआ हैं। मन्मनाभव
बस।एक बाप को ही याद करते हैं।अभी टाईम पड़ा हुआ हैं।इसलिए घड़ी2 भूल जाते हैं। नहीं तो बाबा
युक्ति बहुत सहज बतलाते हैं। जो 5000 बर्ष अ पहले भी बतलाई थी। 5000 बर्ष पहले भी कहा था कि
अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। यह प्रैक्टीकल्की हैं। जो फिर रिपीट करतेहैं। बाप ने कल्प
पहले भी ऐसे ही पावन किया था। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ पावन बनने लिए बाप को याद करो।
पतित बनने में तुमको 5000 वर्ष लगे हैं। कला ज़ड़ी2 कमती होती गई। सारी सीढ़ी उतरने में 5000 बर्ष
लगे हैं। अब बाप फिर जम्प दिलाते हैं। बाप को याद न करेंगे तो काल खा जावेगा। बाप ने काम तो बहुत
अच्छा दिया हैं।मुझे याद करते रहो। मूल बात ही यह हैं। जिस से ही विकर्म विनाश होंगें।और कोई
उपाय हैं नहीं।गंगा तो पतित-पावनी नहीं हैं।पावन बनने की मुख्य बातें हैं। ही याद की यात्रा। बच्चे
जानते हैं इसमें टाईम लगता हैं। घड़ी2 भूल जाते हो।इसलिए चार्ट रखते हो।देवी गुणों की भीदेखना हैं।
समझ तो अभी मिली हैं।यहां जो आते हैं उनको एकदम पत्थर बुधि भी नहीं कहेंगे।कुछ न कुछ थोड़ा बहुत
ठीक बुधि हैं।सुधरते हैं तब ही स्वर्ग में जाते हैं।नही तो सजा खावेंगे।वेइज्जती होंगी। पद भी
कम हो जावेगा। बाप समझाते तो बहुत हैं।गीता का रचता कौन हैं, इसमें ही बड़ी भारी भूल हुई हैं।और
शास्त्र तो ढेर हैं।भारतवासियों का तो एक ही शास्त्र हैं।सारी दुनिया जानती हैंभारत का एक ही शास्त्र गीता
हैं। उसका पढ़ाने वाला भी टीचर एक हैं जिससे तुम देवता बनते हो। देवी गुण भी जरूर धारण करनें हैं।
ड्रामा अनुसार तुम ने जैसे पुरुषार्थ किया था करते रहते हो।उसमें जरा भी फर्क नहीं पड़ सकता। साक्षी हो
देखा जाता हैंहर एक का कैसा पुरुषार्थ हैं। समझ तो सकते हैं ना।जो अन्यन्द अच्छे बच्चे हैं वह झट बतावेंगे
तुम्हारा पुरुषार्थ मीडियम हैं? तुम्हारा बहुत देखने में आता हैं। पुरुषार्थ की भी मार्क्स होती हैं ना।
पढ़ाई से सारा पता पड़ जाता हैं। खुद भी समझते हैंहम कम पढ़े हैं। यह स्कूल हैं।बाप ही मनुष्य
से देवता बनाते हैं। मनुष्य से देवता तब बनते हैं, जब देवी देवता धर्म की स्थापना होती हैं।पुरानी
दुनिया का विनाश नई दुनिया की स्थापना होंगी तब ही बाप आवेंगे। यह विनाश, स्थापना हर 5000 वर्ष
बाद होता ही रहता हैं। टोटल विनाश तो होगा ना। सतयुग में इतने थोड़े ही होंगे। तो जरूर विनाश
होगा ना।इसलिए बाप पुरुषार्थ कराते हैं। पढ़ेंगे कम, याद कम करेंगे तो दर्जा भी कम पावेंगे। दर्जे तो नम्बर-
वार बहुत होते हैं।हमारे पास जास्ती पढ़ने, पढ़ाने वाले कौन हैं वह समझ तो सकते हो ना।लिस्ट भी तुम
निकाल सकते हो।कुमारका के बदले, मनोहर के बदले, दुसरा कोई नाम दे सकेंगे? समझते हैं मनोहर गंगे
अच्छी सर्विसएबुल हैं तो जरूर अच्छे ही पद पावेंगे। यह तो कोई भी समझ सकते हैं। बाबा से कोई पूछे
तो बाबा झट बता देंगे।बाबा को तो सबूत चाहिए ना।सर्विस-एबुल को ही याद किया जाता हैं।नाम भी
उन्हों के ही लिखते हैं कि फलानी को भेजो। समझ तो सकते हैं हम=हम पाउन्ड बनेंगे या शीलिंग बनेंगे
या पैनी बनेंगे। बुद्धि भी कहती हैं हम सर्विस तो कुछ करते नहीं हैं।आत्मा कहती हैंमेरी बुद्धि कम हैं।
हर एक समझ सकते हैं ।देवी देवता धर्म की राजधानी स्थापन हो रही हैं। यह वर्थ पाउन्ड हैं, यह वर्थपैनी
बाप ही जानते हैं यह प्रजा में कितने शाहुकार बनेंगे। बाकि माला के दानों में कौन2 हैं वह तुम भी
समझ सकते हो।प्रजा में कौन शाहुकार बनेंगे, कौन क्या बनेंगे वह तुम नहीं समझ सकेंगे।बहुत2 वास्ट डिफरेन्स
हैं। पुरुषार्थ तो करना चाहिए अच्छा बनने का।पुरुषार्थ किसको कहा जाता हैंवह भी बहुतों को समझ में नहीं आता
हैं। अच्छा मीठे2 सिकीलधे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार रूहानी बच्चों को यादप्यार और गुडमार्निंग।
अच्छा बैडम मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। अच्छा *

****